2015-16

ISSN 2249-1635

A National, Registered, Recognized Referred Hindi Quarterly

लोकयज्ञ

संपादक
डॉ.सोनवणे राजेंद्र 'अक्षत'

वर्ष (13) 8 अंक 29-30 जनवरी से जून 2015 (संयुक्तांक) मूल्य 25 रूपये आर.एन.आई.नं.MAHHIN/2002/12063 पृष्ठ 32

हिन्दी साहित्य गंगा संस्था, जलगांव का गंगा महोत्सव सम्पन्न

रिसर्च लिंक और लोकयज्ञ के संयुक्त तत्वावधान में डॉ.प्रियंका सोनी 'प्रीत', डॉ.अमित शुक्ल, डॉ.उत्तम साळवे, श्री सुभाषचन्द को सुवर्ण पदक प्रदान

जलगाँव (संवाददाता) -अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी प्रचार में अग्रेसर संस्था हिन्दी साहित्य गंगा जलगाँव का साहित्य संमेलन 11, 12 अप्रैल को होटल क्रेजी होस एण्ड रिसोर्ट में बडे ही गरिमामय रूप में सम्पन्न हुआ । दो दिवसीय इस सम्मेलन में पुरे देश से लगभग 150 साहित्यकारों ने भाग लिया ।

दो दिवसीय इस सम्मेलन का भव्य उद्घाटन जलगाँव के विधायक श्री.सुरेश प्रभु, उद्योगपती देवीचन्द्र छोरिया, वरिष्ठ साहित्यकार सुरजीतसिंह जोबन, डॉ.पुनम शर्मा, जे.के.डागर, श्री.मोहम्मद हुसैन खान, डॉ.अमानुल्ला शाह, मा.युसूफ मकरा, श्री.जितेन्द्र जैन, सुशील पगारिया, दलुभाऊ जैन आदि के उपस्थिति में संपन्न हुआ । प्रस्तावना संस्थान की अध्यक्षा डॉ.प्रियंका सोनी ने रखी । तत्पश्चात डॉ.प्रियंका संपादीत ''शब्द-मोहिनी'', श्री.सागर त्रिपाठी लिखित ''अलिफ'', डॉ.पी.बी.फिलीप नागालैण्ड द्वारा लिखित ''नागालैण्ड की लोककथाएँ, आदि पुस्तकों का मान्यवरों के हाथों प्रकाशन किया गया ।''

प्रथम दिन का द्वितीय सत्र राष्ट्रीय संगोष्ठी का था । जिसके विषय 'हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य, समय समाज और साहित्य, साहित्य में स्त्रियों का स्थान, भारतीय संस्कृति के विकास में स्त्रियों का योगदान । इस सत्र के अध्यक्ष ठाकुर रणमत सिंह कॉलेज के डॉ.अमित शुक्ल थे । इस सत्र में डो.रीता गौतम (मुंबई), डॉ.राम आसरे गोयल, डॉ.कृष्णा खेत्री (मुंबई), डॉ.सलमा जमाल (जबलपुर)', भावना सावलिया (घोराजी गुराजत), आशा पाण्डे ओझा (गुजरात) आदि अने आपने शोध पत्र प्रस्तुत किये । इस संगोष्ठी की प्रस्तावना और सुत्र संचालन डॉ.सोनवणे राजेंद्र 'अक्षत' बीड ने किया । तृतीय सत्र में ब्रदर्स सामाजिक संस्थान असाम के दिव्य ज्योति सैकिया ने मानव अधिकारों पर भाषण दिया । जिसका आभार श्री.प्रकाश कोठारी ने माना। चतुर्थ सत्र रंगारंग कार्यक्रम का रहा । पाँचवे सत्र में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया । जिसमें देशभर से आवे हुए कवियों ने काव्य पाठ किया । इस कवि संमेलन का संचालन डॉ.प्रियंका सोनी ने किया ।

12 अप्रैल की सुबह 11 बजे सम्मान समारोह संपन्न हुआ । इस सम्मान समारोह के प्रमुख अतिथी थे उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगाँव के कुलपति डॉ.सुधीर मेश्राम, अतिथि थे डॉ.सोनवणे राजेंद्र 'अक्षत', श्री.सुरजीत सिंह जोबन, डॉ.ललिता जोगड, दलुभाऊ जैन, डॉ.पुनम शर्मा आदि के हाथों सभी साहित्यकारों को गंगा ज्ञानेश्वरी गौरव पुरस्कार, शाल, स्मृतिचिन्ह, सम्मानपत्र और स्मरिका मंदाकिनी देकर पुरस्कृत किया गया ।

इसी सम्मान समारोह में डॉ.प्रियंका सोनी ''प्रीत'' को सालभर हिन्दी की सेवा करने हेतु, शोध के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए डॉ.उत्तम सालवे (बीड), डॉ.अमित शुक्ल (रीवा) और श्री सुभाषचन्द को अन्तरराष्ट्रीय शोध जर्नल रिसर्च लिंक इन्दौर और राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त शोध साहित्य की पत्रिका लोकयज्ञ के संयुक्त तत्वावधान में समारोह के प्रमुख अतिथि कुलपति डॉ.सुधीर मेश्राम के हाथों सुवर्ण पदक और सम्मान पत्र प्रदान किया गया । साथ ही में डॉ.सोपान सुरवसे, प्रो.ज्योतिश्वर भालेराव को कुलपति के हाथों रिसर्च लिंक के बेस्ट पेपर ऑफ द ईयर अवार्ड प्रदान किये गये । इस सत्र में भी कई पुस्तकों का लोकार्पण सभी मान्यवरों के करकमलों द्वारा किया गया। इस सत्र का संचालन रितैष सोनी, हितेश ने किया तो आभार डॉ.प्रियंका सोनी 'प्रीत' ने माना । भोजन पश्चात बहुभाषिक कवि संमेलन के आयोजन के बाद समारोह का समापन हुआ ।

ISSN 2249-1635

A National, Registered, Recognized Referred Hindi Quarterly

जनवरी से जून 2015 (संयुक्तांक) लोकयज्ञ पृष्ठ 12

रिसर्च पेपर

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासीयों की भूमिका

- डॉ.मीर्झा असदबेग रूस्तुमबेग

यह तथ्य सर्व विदित है कि हमारा देश भारतवर्ष 15 अगस्त 1947 के पूर्व अंग्रेजों के आधीन था । कहने का तात्पर्य यह है कि हमारे देश में अंग्रेजों का शासन था और उन्हीं के द्वारा निर्धारित कानूनों पर हमारे देश की शासन प्रणाली संचालित थी । देश को आजाद कराने में हमारे स्वातंत्र्य वीरों के पसीने छूट गये, तब कहीं हमारा देश आजाद हुआ । आज़ादी के इस यज्ञ में हजारों वीरों को बलि देनी पडी, तब कहीं जाकर यह दिन देखने को मिले ।

आजादी की इस लड़ाई में हमारे अनेक आदिवासी वीरों का योगदान भी महत्वपूर्ण है । जिनके अथक सहयोग और आन्दोलन के कारण ही हमें आज़ादी प्राप्त हो सकी है । 'भुरेटिया' नामक कविता में इस तथ्य को दर्शाया गया है कि हम स्वतन्त्रता से कम किसी भी स्थिति पर समझौता करने को तैयार नहीं हैं । तथा

''भुरेटिया न मानू रे न मानू रे
दिल्ली में म्हारी कलम है
अहमदाबाद में म्हारी जाजम
जाम्बू में म्हारी फौजें हैं
मानगढ़ में म्हारी धूणी पंजराज धापूवुंई
तोकई (कहि) गया
गोविंद गुरू है
भुरेटिया न मानू रे न मानू रे''[1]

इस प्रकार आदिवासी स्वातन्त्र्य वीर अपनी पूर्ण स्थिति को व्यक्त करता है कि हम पूरी तरह से सक्षम हैं और किसी भी स्थिति का मुकाबला करने को भी हम तैयार हैं क्योंकि हमारे पास युद्ध करने अर्थात मुकाबला करने के लिए फौज-लष्कर भी है ।

आज से 157 वर्ष पूर्व सन 1857 में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम हुआ था, इतिहास में स्वतंत्रता के लिए यह पहला संग्राम माना जाता है । इस बात को हम इस प्रकार भी व्यक्त कर सकते हैं कि हम भारतीयोंद्वारा अंग्रेजी अधिपत्य के विरूद्ध छेड़ा गया प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था । संग्राम के सिपाहियों के इस विद्रोह को 'गदर' के नाम से भी जाना जाता है । उपलब्ध जानकारी के अनुसार भारत के तत्कालीन राजाओं, नवाबों ने मिलकर तब अंग्रेजों को भारत से बाहर खदेड़ने का प्रयास किया था । देश की आम जनता (प्रजा) भी इस युद्ध में शामिल थी, किन्तु अब तक इस आन्दोलन में आदिवासियों के योगदान की कोई स्पष्ट जानकारी कम-से-कम आम लोगों को तो नहीं ही है । जानकारी न होने का कारण यह है कि हमारे किसी भी इतिहास ने अपनी किसी भी पुस्तक के पृष्ठों पर इस स्वतंत्रता संग्राम के अभियान में आदिवासियों के योगदान की चर्चा तक करना मुनासिब नहीं समझा ।

इतिहास के पृष्ठों से ओझल परन्तु हकीकत में इन आदिवासियों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम (1857 तथा इससे भी पूर्व) के आन्दोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया है । 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से पूर्व भी 'सन 1766 ई.में झारखण्ड ब्रिटिश शासन के खिलाफ खड़ा होकर युद्ध छेड़ चुका था । यह संग्राम पहाड़िया विद्रोह कहलाता है, और झारखण्ड के कुडहइंत, जामताड़ा तथा नाला क्षेत्रों में आदिवासी वीरपुंगव रमाना आल्हाड़ी के नेतृत्व में तत्कालीन ब्रिटिश शासन के विरूद्ध लडा गया था । इसी प्रकार महाराष्ट्र के पुणे, थाने और नासिक के आदिवासियों ने अंग्रेजों के विरूद्ध पहली लढ़ाई लडी थी । सन 1766 ई.में प्रारम्भ हुआ पहाड़िया विद्रोह आदिवासियों के धैर्य और पराक्रम की अद्‌भुत मिसाल है । यह युद्ध सन 1778 ई. तक यानी लगातार बाहर वर्षों तक चलता रहा ।'[2]

एक बात ध्यान देने योग्य है कि वैसे तो आदिवासी समाज कभी भी हिंसा नहीं चाहता है । पूर्वी भारत में हिंसात्मक घटनाएँ घटती रहती हैं, लेकिन ये हिंसाएँ जानबूझकर ही आदिवासियों पर थोप दी गयी हैं । कुछ कारण ऐसे भी है कि उन्हें मजबूरी वश हिंसा पर उतारू होने के लिए बाध्य होना पड़ा । त्रिपुरा राज्य की एक अल्पसंख्यक कवयित्री अपने कविता में इस प्रकार लिखती हैं कि 'हरियाली का हरियर हौसला/फहराते रहता/सभ्यता की अदमनीय पताका ।'

''सन 1781 ई.में रानी सर्वेश्वरी ने अंग्रेजों के विरूद्ध नगाड़ा बजा दिया था । आदिवासी योद्धा तिलक माँझी ने आदिवासी सेनिकों के जत्थे निर्मित-संगठित करकें चुपचाप (गणिमी) तरीके से 1784 ई. की जनवरी के प्रथम सप्ताह में अंग्रेजों पर हमला कर दिया । एक ही झटके में भागलपुर, मुंगेर और संथाल परगना पर अधिकार कर लिया है । कथन हैं कि भागलपुर में एक अंग्रेज अधिकारी ऑगस्ट क्लीवलैंड ने एक संताली कन्या के साथ बलात्कार किया था । इस घटना के घटित होने के उपरान्त तत्कॉल तिलक माँझी वीर ने उस अधिकारी को तीर मारकर मौत के घाट उतार दिया था।'' [3] बदला लेने के लिए अंग्रेज आग बबूला हो उठे और संतालों पर कई हमले किये, परन्तु वीर आदिवासियों के आगे उनकी एक भी नहीं चली । अंग्रेज उसे किसी भी हमले में परास्त नहीं कर सके ।

सन 1757-58 ई. में विष्णु मानकी के नेतृत्व में आदिवासियों ने अंग्रेजों से लोहा लिया । दुक्खन मानकी ने 1800 ई. से 1808 ई. तक बराबर अंग्रेजों के साथ युद्ध किया । सन 1819-20 में तमाड़ में कोंता मुंडा तथा ऋगदेव मुंडा के नेतृत्व में कोल विद्रोह हुआ । सन 1820-21 में 'हो' विद्रोह ने एक वर्ष से भी अधिक समय तक अंग्रेजों को उलझाये रखा। संथाल हूल विद्रोह में दलितों तथा पिछड़ी जातियों ने भी पानी पीने के बर्तन, गणवेश, जूते, बेल्ट, लाठी, बल्लम भाले, बरछे, कुल्हाडी तथा तीर आदि सामान उपलब्ध करवा कर

आदिवासी वीरों की भरपूर सहायता की । सन 1895 ई. से सन 1990 ई. तक नयी राजस्व व्यवस्था, जंगल-जमीन पर अधिकार, जमींदारी, ठेकेदारी तथा सूदखोरी के विरूद्ध महान क्रान्तिकारी आदिवासी वीर बिरसा मुण्डा के नेतृत्व में अंग्रेजों के विरूद्ध युद्ध लढ़ा गया । मध्यप्रदेश के निमाड़ में निवास करनेवाले तात्या भील से तत्कालीन ब्रिटिश सरकार थर-थर काँपती थी । भीमा नाईक, मोबासा नाइक, राजामुरिया, खाज्या नाइक, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई (गैर आदिवासी) ऊकियांग नंगबाह, रूपलियानी आदि अनेक आदिवासी वीर निरन्तर अंग्रेजों से लोहा लेते रहे और मरते-मरते देश को अन्ततः आजादी दिलवा दी ।

*** निष्कर्ष :**

बड़े ही गर्व की बात है कि हमारे देश को स्वतंत्र कराने में हमारें आदिवासी वीरों ने अपना सब कुछ निछावर कर दिया यहाँ तक की हँसते-हँसते अपने प्राणों को भी न्योछावर कर दिया है । दुःख इस बात का है कि हम आज इन वीरों को तथा इनकी शहादतों को अनदेखा कर रहे हैं । इन्हीं वीरों की बदौलत हम आज खुली हवा में साँस ले रहे हैं । इन वीरों की कार्य प्रणाली को तथा इन वीरों के इतिहास में समावेशित करना अति आवश्यक है । सरकार को इनके परिवारों की आर्थिक व्यवस्था तथा शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए, यही मेरी शासन के कार्यकर्ताओं से अपेक्षा है ।

*** संदर्भ ग्रंथ सूची :**

1) आदिवासी विमर्श : अवधारणा और आन्दोलन - कमलेश कुमार, पृ.168-169

2) वही, पृ.161

3) आदिवासी साहित्य स्वरूप एवं विश्लेषण - डॉ.शेख शहेनाज बेगम अहेमद, पृ.130

- डॉ.मीर्झा असदबेग रूस्तुमबेग
हिन्दी विभाग अध्यक्ष,
मिल्लीया आर्टस् सायन्स अॅण्ड मॅनेजमेंट कॉलेज, बीड,
जि.बीड़ -431122 (महाराष्ट्र)